<u>Date – 30 May 2022</u>

MCCD 2020 रिपोर्ट

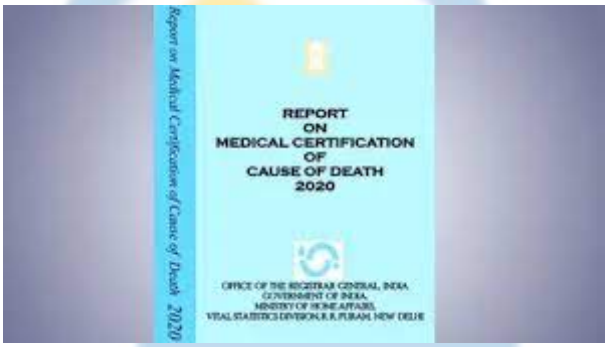

- मेडिकल सर्टिफिकेशन ऑफ़ कॉज़ ऑफ़ डेथ (MCCD) 2020 रिपोर्ट के अनुसार, COVID-19 लॉकडाउन के पहले वर्ष में पिछले एक दशक के दौरान सांस की बीमारियों से मरने वालों की संख्या सबसे अधिक देखी गई।

MCCD रिपोर्ट:

- जन्म और मृत्यु पंजीकरण (आरबीडी) अधिनियम, 1969 के प्रावधानों के तहत देश में मृत्यु के कारणों का चिकित्सा प्रमाणन (एमसीसीडी) योजना शुरू की गई थी।
- तब से यह देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में दक्षता के विभिन्न स्तरों के साथ शुरू हुआ है।
- इस योजना के तहत, भारत के महापंजीयक का कार्यालय मृत्यु के चिकित्सकीय रूप से प्रमाणित कारणों से संबंधित आंकड़ों को राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के संबंधित मुख्य रजिस्ट्रारों के जन्म और मृत्यु पंजीकरण कार्यालयों द्वारा एकत्रित, संकलित और सारणीबद्ध रूप में प्राप्त करता है।

YOJNA IAS

MCCD रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं:

कुल मौतें:

- वर्ष 2020 में सभी कारणों से हुई मौतों की कुल संख्या 2 लाख थी।
- रिपोर्ट में 2020 और 2021 के लिए भारत की अतिरिक्त मृत्यु दर 4 लाख अनुमानित है।
- नागरिक पंजीकरण प्रणाली (सीआरएस) के आंकड़ों ने 2019 की तुलना में 2020 में सभी कारणों से अतिरिक्त 75 लाख मौतों की सूचना दी।

चिकित्सकीय रूप से सिद्ध मौतें:

- चिकित्सकीय रूप से प्रमाणित मौतों के मामले में, यह राष्ट्रीय स्तर पर कुल पंजीकृत मौतों का 5% है, लेकिन लाइलाज बीमारी के समय मरने वालों की संख्या बढ़कर 54.6% हो गई, लेकिन लाइलाज बीमारी के समय यह बढ़कर 54.6% हो गई।
- चिकित्सकीय रूप से प्रमाणित कुल मौतों में से लगभग 7% शिशु मृत्यु के रूप में रिपोर्ट की जाती हैं।

मृत्यु के प्रमुख कारण:

मृत्यु के नौ प्रमुख सामूहिक कारण हैं जो मृत्यु के सभी चिकित्सकीय रूप से सिद्ध कारणों का लगभग 88.7% हैं:

- संचारी रोग (1%)
- श्वसन पथ के रोग (10%)
- विशेष प्रयोजन कोड- COVID-19 (8.9%)
- कुछ संक्रामक और परजीवी रोग – मुख्य रूप से सेप्टीसीमिया और तपेदिक (1%) शामिल हैं
- अंतःस्रावी, पोषण और चयापचय संबंधी रोग (8%)
- चोट, जहर और बाहरी कारणों के कुछ अन्य परिणाम (6%)
- नियोप्लाज्म (7%)
- प्रसवकालीन अवधि में उत्पन्न होने वाली कुछ स्थितियां (1%)

YOJNA IAS

- लक्षण और असामान्य नैदानिक परिणाम “कहीं और वर्गीकृत नहीं” (6%)

कोविड-19 से मौतें:

- COVID-19 वायरस, जो सांस की बीमारी का एक कारण भी है, को अलग से रिपोर्ट में “विशेष उद्देश्यों के लिए संहिता (COVID-19 मौत) के तहत रिपोर्ट की गई मौतों” के रूप में रिपोर्ट किया गया है।
- COVID-19 मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण है, जो राष्ट्रीय स्तर पर कुल चिकित्सा मौतों का 8.9% है।
- हालांकि, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक साल 2020 में 1.49 लाख लोगों की मौत कोविड-19 से हुई|
- मई 2022 तक भारत में कोविड-19 से मरने वालों की संख्या 5.2 लाख थी।

सांस की बीमारी से मौतें:

- साल 2020 में निमोनिया, अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी सांस की बीमारियों से 1,81,160 मौतें हुईं, जबकि साल 2019 में 1,52,311 से ज्यादा मौतें हुईं।
- 70 वर्ष से अधिक आयु के लोग श्वसन रोगों से सबसे अधिक प्रभावित थे, जो अधिकांश मौतों के लिए जिम्मेदार थे, इस आयु वर्ग से संबंधित सभी पंजीकृत चिकित्सकीय प्रमाणित मौतों में से 4% के साथ।
- इसके बाद 55-64 वर्ष के आयु वर्ग में 9% मौतें होती हैं, जबकि 65-69 वर्ष के आयु वर्ग में भी मौतों की एक महत्वपूर्ण संख्या (4.5%) दर्ज की गई है।
- सबसे अधिक मौतें 45 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग में देखी गईं, जो कुल मौतों का 82.7% है।

Swadeep Kumar

लैवेंडर महोत्सव

- हाल ही में भारत के पहले लैवेंडर महोत्सव का उद्घाटन जम्मू के भद्रवाह में किया गया।
- लैवेंडर की खेती ने जम्मू-कश्मीर के सुदूर इलाकों में लगभग 5,000 किसानों और युवा उद्यमियों के लिए रोजगार का सृजन किया है। 200 एकड़ में इसकी खेती में 1,000 से अधिक किसान परिवार शामिल हैं।

लैवेंडर क्रांति:

- वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) अरोमा मिशन के माध्यम से केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा 2016 में बैंगनी या लैवेंडर क्रांति शुरू की गई थी।
- जम्मू और कश्मीर के लगभग सभी 20 जिलों में लैवेंडर की खेती की जाती है।
- पहली बार किसानों को खेती के लिए मुफ्त लैवेंडर के पौधे दिए गए, जबकि पहले लैवेंडर की खेती करने वाले किसानों को 5-6 रुपये प्रति पौधा दिया गया।

लक्ष्य:

- आयातित सुगंधित तेलों के बजाय घरेलू किस्मों को बढ़ावा देकर घरेलू सुगंधित फसल आधारित कृषि अर्थव्यवस्था का समर्थन करना।

उत्पाद:

- मुख्य उत्पाद लैवेंडर का तेल है जो कम से कम 10,000 रुपये प्रति लीटर बिकता है।
- लैवेंडर का पानी, जो लैवेंडर के तेल से अलग किया जाता है, अगरबत्ती बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

- फूलों से आसवन के बाद बनने वाले हाइड्रोसोल का उपयोग साबुन और रूम फ्रेशनर बनाने के लिए किया जाता है।

महत्त्व:

- यह सरकार की 2022 तक कृषि आय को दोगुना करने की नीति के अनुरूप है।
- यह नवोदित किसानों, कृषि-उद्यमियों को आजीविका के साधन उपलब्ध कराने में मदद करेगा और इस क्षेत्र में स्टार्टअप इंडिया अभियान और उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देगा।
- बैंगनी क्रांति का 500 से अधिक युवाओं ने लाभ उठाया था और उनकी आय कई गुना बढ़ गई थी।

अरोमा मिशन:

- सुगंध उद्योग और ग्रामीण रोजगार के विकास को बढ़ावा देने के लिए कृषि, प्रसंस्करण और उत्पाद विकास के क्षेत्रों में वांछित हस्तक्षेप के माध्यम से सुगंध क्षेत्र में परिवर्तन लाने के लिए सीएसआईआर द्वारा अरोमा मिशन की परिकल्पना की गई है।
- यह मिशन ऐसे आवश्यक तेलों के लिए सुगंधित फसलों की खेती को बढ़ावा देगा, जिनकी अरोमा (इत्र) उद्योग में उच्च मांग है।
- यह मिशन भारतीय किसानों और सुगंध उद्योग को 'मेन्थोलिक मिंट' जैसे कुछ अन्य आवश्यक तेलों के उत्पादन और निर्यात में वैश्विक प्रतिनिधि बनने में मदद करेगा।
- इसका उद्देश्य उच्च लाभ कमाकर, बंजर भूमि का उपयोग करके और जंगली और पालतू जानवरों से फसलों की रक्षा करके किसानों को समृद्ध बनाना है।

अरोमा मिशन चरण- I और चरण II:

- पहले चरण के दौरान, सीएसआईआर ने 6000 हेक्टेयर भूमि पर खेती करने में मदद की और देश भर में 46 आकांक्षी जिलों को कवर किया। साथ ही 44,000 से अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया।
- फरवरी 2021 में सीएसआईआर ने अरोमा मिशन का दूसरा चरण शुरू किया जिसमें 45,000 से अधिक कुशल मानव संसाधन शामिल करने का प्रस्ताव है जिससे देश भर के 75,000 से अधिक किसान परिवारों को लाभ होगा।

नोडल एजेंसी:

- सीएसआईआर-केंद्रीय औषधीय और सुगंधित पौधे संस्थान (सीएसआईआर-सीआईएमएपी), लखनऊ इसकी नोडल एजेंसी है।

संभावित परिणाम:

- लगभग 5500 हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र को सुगंधित नकदी फसलों की कैप्टिव खेती के तहत लाना, विशेष रूप से पूरे देश में वर्षा सिंचित/निम्नीकृत भूमि को लक्षित करना।
- देश भर के किसानों/उत्पादकों को आसवन और मूल्यवर्धन के लिए तकनीकी और ढांचागत सहायता प्रदान करना।
- किसानों/उत्पादकों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी बाय-बैक तंत्र को सक्षम करना।
- वैश्विक व्यापार और अर्थव्यवस्था में उनके एकीकरण के लिए आवश्यक तेलों और सुगंधों का मूल्यवर्धन।

Swadeep Kumar

YOJNA IAS